कृष्ण-लोहित मृदभाण्ड

Black and Red Ware

Dr. Manoj Kumar
Assistant Professor (Guest)
Dept. of A.I.H. & Archaeology,
Patna University, Patna-800005
Email- dr.manojaihcbhu@gmail.com

P.G./ M.A. IV**th** **Semester ,**

Paper - Ancient Indian Potteries (E.C.)

Dept. of A.I.H.& Archaeology. Patna University, Patna

कृष्ण-लोहित या काले-लाल मृदभाण्डों से तात्पर्य उन मृदभाण्डों से है जो बाहर से और अन्दर से काले रंग के होते हैं। कभी-कभी इनका ऊपरी भाग काला और निचला भाग लाल रंग का होता है। ये पात्र अपने आकार-प्रकार, अलंकरण एवं चित्रण-अभिप्राय आदि में अन्य पात्रों से भिन्न हैं। साथ ही इनके निर्माण की तकनीक भी भिन्न है, इसीलिए इन पात्रों को एक भिन्न नाम दिया गया है। इन पात्रों को उल्टी तकनीक (Inverted-Firing Technique) से पकाया गया है जो सम्भवत: मिस्र में प्रचलित तकनीक से प्रभावित है। ये पात्र मुख्य रूप से ताम्र-पाषाण संस्कृति से सम्बद्ध दिखाई देते हैं किन्तु चिरांद और पिकलिहल आदि नवपाषाणिक स्थलों से तथा सूरकोटदा, लोथल. रोजदी, रंगपुर, देसलपुर आदि हड़प्पीय स्थलों से भी ये प्राप्त हुए हैं। उत्तर- हड़प्पाकालीन चमकीले लाल पात्रों के साथ भी ये मिलते हैं- जैसे गुजरात में मालवण और बंगाल में स्थित महिष्दल तथा पाण्डु राजरढीबी आदि । बनास संस्कृति से सम्बद्ध अधिकांश स्थलों से ये प्राप्त हुए हैं जैसे अहाड़, गिलुण्ड, चोसल आदि। काल-क्रम एवं प्राप्ति-स्थलों के आधार पर इन पात्रों को तीन वर्गों में वर्गीकृत किया गया है-

(1) रंगपुर-लोथल या हड़प्पाकालीन संस्कृति

(2) मध्य भारत या ताम्र-पाषाणकालीन संस्कृति

(3) दक्षिण भारत या वृहत्पाषाण स्मारक संस्कृति या लौहयुक्त वृहत्पाषाण स्मारक संस्कृति

प्रसार / विस्तार - कृष्ण-लोहित मृद्भाण्ड अहमदाबाद जिले में सरगवाला ग्राम के निकट स्थित लोथल से, मदर नदी के किनारे स्थित रंगपुर, दक्षिणी उड़ीसा के गंजाम जिले में स्थित जौगढ़, मध्य नर्मदा के उत्तरी तट पर स्थित माहेश्वर, राजपूताना के दक्षिण-पूर्व में, बनास और चम्बल की घाटियों में, इन्दौर से 60 मील दक्षिण में नर्मदा के तट पर स्थित नावदाटोली, गोदावरी की सहायक प्रवरा नदी के किनारे स्थित नेवासा, उज्जैन से लगभग 35 मील उत्तर-पश्चिम में चम्बल नदी के पूर्वी तट पर स्थित नागदा आदि स्थलों से प्राप्त हुए हैं। नावदाटोली की मालवा संस्कृति से प्राप्त होने के कारण व्हीलर ने इन्हें 'मालवा-पात्र-परम्परा' कहा है। ये ईनामगाँव से भी प्राप्त हुए हैं। कायथा और जोर्वे संस्कृति से भी ये मिले हैं। केदारनाथ शास्त्री का विचार है कि रंगपुर और लोथल से प्राप्त लाल और मटियाली कुम्भकलाओं के समान स्तरों से प्राप्त मृदभाण्डों से यह सिद्ध होता है कि रंगपुर से प्राप्त संस्कृति सैन्धव संस्कृति के ह्रास-काल की है। मोहनजोदड़ो से प्राप्त मृद्भाण्ड केवल लाल रंग के हैं। रंगपुर और लोथल में हड़प्पा संस्कृति के स्तरों में एकसाथ लाल और मटियाली कुम्भकलाओं पूर्वजों में एक लम्बे समय का व्यवधान था। रंगपुर में कृष्ण-लाहित मृद्भाण्ड चमकीले लाल मृदभांड (Lustrons Red ware) के ऊपरी स्तर से मिले हैं।

सांकलिया के अनुसार -"The late phase also contained in its top level, sherds of Black and Red ware which had a technical similarity with the 'megelithic.' pottery of Southern India. This Black and Red ware, is not normally earlier than 1000 B.C. and is often much later, but it certainly occurs, in small quantities, with late Indus Valley material at Lothal, which is only thirty miles north-east of Rangpur, and a similar association has now been observea at Rosadi in mid Kathiawad."

लोथल के द्वितीय काल के स्तर से भी इस प्रकार के मृदभांड मिले हैं , हालांकि ये पूर्णतया सैन्धव संस्कृति के समान नहीं हैं। केवल कटोरे और थालियाँ ही

तुलनात्मक रूप से समान है । इन पर विभिन्न प्रकार के अलंकरणों के अतिरिक्त सर्प, बारहसिंगा एवं बत्तख की आकृतियाँ बनी हुई हैं। इसीलिए व्हीलर ने इन्हें प्रौढ़ हड़प्पीय न कह कर हड़प्पा का एक उपवर्गीय पात्र परम्परा माना है ।

नावदाटोली के प्रथम काल से इस पात्र- परम्परा के कटोरे और प्याले प्राप्त हुए है । जिनपर सफेद रंग से चित्रण यनाए गए हैं। अहाड़ से भी ये पात्र प्राप्त हुए हैं । व्हीलर का विचार है कि इन पात्रों को राजपूताना के सीमावती प्रान्तों से आयात किया जाता था -

"Though it copies some of the shapes of the Malwa ware, its own distinctive shapes are a shallow dish with broad flat rim and stand and a high con- cave-walled cup with bulging bottom. An almost complete bowl of the latter in fine white slip recalls a similar vessel from the earliest period at Sialk, in Iran. A band of running an- telopes and dancing human figures seem to be characteristic designs in this fabric."

बनास और चम्बल की घाटियों से भी इस प्रकार के पात्र प्राप्त हुए हैं । माहेश्वर में ये पात्र उत्तरी कृष्ण मार्जित पात्रों और लौह उपकरणों के साथ मिले हैं । इनमें किनारारहित कटोरे , छिछली थालिया, गुम्बदाकार घड़े विशेष उल्लेखनीय हैं। व्हीलर ने इन पात्रों को 'बरनिश्ड मेगालिथिक ब्लैक एण्ड रेड वेयर (Burnished Megalithic Black and Red Ware) नाम दिया है ।

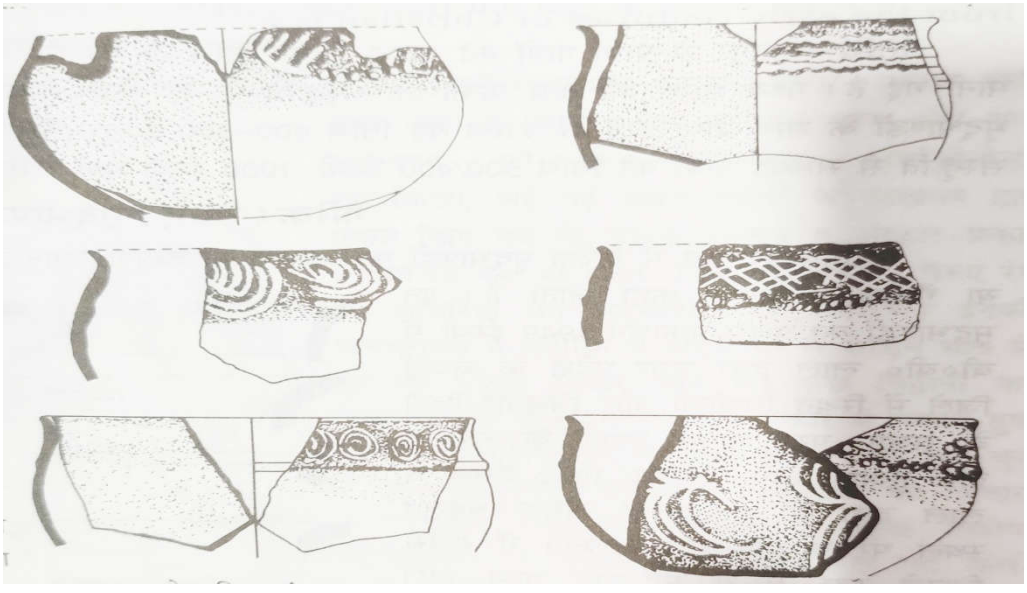

ताम्र-पाषाणिक संस्कृति अहाड़ से कृष्ण – लोहित मृदभांड

कर्नाटक प्रान्त के टेक्कलकोटा, वटगल का ताम्र पाषाणिक संस्कृति से ये मिले हैं। ऐसा माना जाता है कि ये पात्र उत्तर प्रदेश के अतरंजीखेड़ा और राजस्थान के नोह नामक स्थलो से प्राप्त होने बाले गेरुए पात्रों (O.C.P.) के बाद के स्तरो एवम् चित्रित धूसर पात्रों (P.G.W.) के पूर्ववर्ती थे। अतरंजीखेड़ा, हस्तिनापुर, खलौआ आदि चित्रित धूसर मृद्भाण्ड संस्कृति वाले स्थलों से भी कृष्ण-लोहित मृद्भाण्ड मिले हैं। साथ ही उत्तरी कृष्ण मार्जित मृद्भाण्डों (N.B.P.W.) वाले स्थल जैसे सोहगौरा, प्रह्लादपुर, राजघाट (उत्तर प्रदेश में), बिहार में स्थित सोनपुर और चिरांद तथा राजस्थान के बैराट से भी इन्हें प्राप्त किया गया है। आरम्भिक ऐतिहासिक काल से भी ये मिले हैं और इन्हें एक विशिष्ट रूप में वृहत्पाषाण स्मारक संस्कृति (Megalithic Culture) से प्राप्त किया गया है। इस प्रकार अग्रवाल के शब्दों में " Thus the black-and-red ware occurs in a veriety of cultural contexts and has no distinctive typology of its own. On the other hand, its shapes are conditioned by the associated ceramic morphology. It is not confined to any region-its spatial distribution covers the whole of India. Chronologically too it has a wide spread; it occurs at Lothal and Piklihal in the mid-third millennium contexts, whereas at several other sites it is found from the early centuries of Christian era."

तिथिक्रम - रंगपुर से प्राप्त पात्रों को 1000 ई०पू० तिथि दी गई है। लोथल में यह तिथि 1500-1400 ई०पू० के मध्य मानी गई है। मध्य भारत की ताम्र पाषाणिक संस्कृति में यह तिथि 1800 -800 ई०पू० के मध्य है। उत्तरी मृदभाण्डों के साथ प्राप्त होने के कारण यह तिथि 800-500 ई०पू० भी मानी गई है। दक्षिण भारत की वृहत्पाषाण स्मारक संस्कृति से सम्बद्ध पात्रों की तिथि 1000-500/400 ईस्वी पूर्व तक स्वीकार की गई है। **इस प्रकार विभिन्न पुरस्थलों ज्ञात** साक्ष्यों एवं तिथियों के आलोक में इस पात्र परम्परा का तिथिक्रम 1500 ई0 पूर्व से 500 ई0 पूर्व0 के मध्य निर्धारित किया जा सकता है।